संदर्भ पत्रिकाओं से भी लिए गए हैं। केन्द्रीय कवियों के अलावा अन्य का यत्र-तत्र नामोल्लेख करना हमारी विवशता और सीमाएं रही है। साठोत्तरी कविता के बहुत से कवियों को शोध में स्थान न दे पाना हमारी असमर्थता ही रही है।

Acknowledgement

--:: आ भा र ::--

सर्व प्रथम मित्रद्वय डॉ० वेदप्रकाश, 'अमिताभ' और प्रो० रमेशचन्द भटनागर बधाई के पात्र हैं जिन्होंने न केवल विषय को अन्तिम रूप देने, उसकी रूपरेखा बनवाने में सहायता की बल्कि शोध-प्रबन्ध के प्रस्तुतीकरण तक अनेक प्रकार की सहायता तथा सुझावों से समय-समय पर प्रेरणा देते रहे हैं।

शोध-प्रबन्ध के निर्देशक गुरुवर डॉ० दयाशंकर जी शुक्ल, जिनका वात्सल्य भाव मेरे प्रति सदैव बना रहा, इस शोध की पूर्णता का सबसे बड़ा कारण है। उनके स्पष्ट विवेचन, शोध-दृष्टि और अमूल्य निर्देशों के फलस्वरूप ही यह कार्य पूर्ण हो पाया है। उनकी लगातार शोध-प्रगति की जिज्ञासा ही शोध के प्रति मेरे संचारी भाव को समय-समय पर स्थायीभाव में परिवर्तित करती रही। मैं उन्हें यथावत नमन करता हूं। डॉ० मदनगोपाल जी गुप्त (हिन्दी विभागाध्यक्ष) के अमूल्य सुझावों ने भी मुझे प्रेरणा प्रदान की है। उसी प्रेरणा ने स्वाध्याय के प्रति मेरे विश्वास को और गहन तथा आकर्षक बना दिया। मैं उनके प्रति सादर विनयावत हूँ।

शोध-कार्य के मध्य अनेक प्रकार के प्रश्न विषय से सम्बन्धित मस्तिष्क में उठते रहे गए। इस जिज्ञासा की शान्ति के लिए अनेक विद्वानों,

कवियों तथा समीक्षकों से पत्र-व्यवहार भी करना पड़ा। इन सहयोगियों में डॉ० कैलाश वाजपेयी (मिक्सिको) डॉ० प्रेमप्रकाश गौतम, डॉ० गंगाप्रसाद विमल, डॉ० नन्दकुमार राय, डॉ० श्यामविहारी राय, अजित कुमार, बलदेववंशी, मुद्राराक्षस (दिल्ली) डॉ० ओमप्रकाश अवस्थी (फतेहपुर) चन्द्रकान्त देवताले (रतलाम) राजेन्द्रप्रसाद सिंह (मुजफ्फरपुर) डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी (इलाहाबाद) शलभ श्री रामसिंह (कलकत्ता) राजकुमार कुंभज(इंदौर) आदि प्रमुख हैं। सभी ने पत्रों द्वारा अपने विचारों से समय-समय पर मुझे अवगत कराया। मैं इन सभी अधुनातन साहित्य के अध्येयताओं के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ।

मैं डॉ० श्रीराम नागर, डॉ० गोविन्द रजनीश, डॉ० अशोक शर्मा, डॉ० कृष्णचन्द्र पण्ड्या, डॉ० विष्णु चतुर्वेदी, डॉ० सुरेश पाण्डेय, प्रो० सव्यसाची, मनमोहन 'उपेन्द्र', आचार्य गिरिराज शर्मा, ताहिर हुसेन रिजवी, प्रो० नरेन्द्र फौजदार, महेन्द्रसिंह शर्मा, महेन्द्रसिंह आदि सहयोगी विद्वानों, मित्रों का भी आभारी हूं जिन्होंने मुझे अनुपलब्ध पुस्तकें तथा पत्रिकाएं उपलब्ध कराने के साथ-साथ अन्य अनेक प्रकार का सहयोग भी दिया है।

अलीगढ़ विश्वविद्यालय अलीगढ़, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा तथा कन्हैयालाल माणिकलाल हिन्दी संस्थान आगरा के पुस्तकालयाध्यक्षों के प्रति आदर प्रकट करना भी अपना कर्तव्य समझता हूं जिन्होंने मुझे अपने पुस्तकालयों में अध्ययन करने की अनुमति प्रदान की। इस संदर्भ में जवाहर पुस्तकालय मथुरा, भारतीय अनुसंधान भवन,मथुरा, बाबू वृन्दावनदास पुस्तकालय मथुरा, धर्म समाज कालिज अलीगढ़, किशोरी रमण कालिज,मथुरा के संरक्षकों, निदेशकों तथा पुस्तकालयाध्यक्षों को भी स्मरण करता हूं। जिन्होंने मुझे अपने पुस्तकालयों का लाभ उठाने का अवसर प्रदान किया।

उन सभी सहयोगियों को भी जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष

रूप से मुझे किसी न किसी रूप में सहयोग दिया है के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापन करता हूं। जो मेरी स्मृति की 'रेंज' से बाहर भी हो गए हैं उन जाने अनजाने तथा मूक प्रेरकों को भी मैं धन्यवाद देता हूं। शोध के टंकितकर्ता श्री चन्द्रभान राठी भी साधुवाद के पात्र हैं जिन्होंने इसे अन्तिम रूप दे ही दिया।

एक और स्मरण, जिसका उल्लेख किए बिना मुझे कल नहीं। हो भी कैसे ? जिसने जाने किस आशा में तन-मन-धन सभी कुछ तो नगण्य समझा। मेरी प्रेरणा की विन्दु उस 'नीलम' को बधाई है, नमन है प्रणाम है।

अन्त में यह शोध प्रबन्ध अपनी कुछ मुश्किलों को पार करता हुआ आपके सामने है। आर्थिक समस्याएं शोध में बार-बार रोड़ा बनीं, जीवन की स्वाभाविक महत्वाकांक्षाओं और फुटपाथी जीवन में आज तक कोई ताल-मेल नहीं बैठ पाया है। इस विसंगति ने ही मेरे द्वन्द्व को और गहराई दी। कुछ सीमाओं और असमर्थताओं के लिए क्षमा याचनाओं के साथ ही यह शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया जा रहा है।

मार्च, १९७७

भवदीय,
बादामसिंह रावत
(बादामसिंह रावत)